IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

बाल गंगाधर तिलक का भारतीय समाज एवं शिक्षा में योगदान

योगेन्द्र कुमार

(रिसर्च स्कॉलर) निर्वाण यूनिवर्सिटी, जयपुर (राज.)

सारां ा–

प्रस्तुत प्रपत्र में बाल गंगाधर तिलक के जीवन परिचय उनकी शिक्षा तथा तिलक का समाज और शिक्षा में योगदान का वर्णन किया गया है इन्होंने समज में फैली कुरीतियों जैसे बाल विवाह, सती प्रथा ,जमीदारी प्रथा का विरोध करने के साथ ही अंग्रेजी शिक्षा का भी विरोध किया। इन्होंने अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा के साथ–साथ छात्र–छात्राओं के लिए मुफ्त शिक्षा व मुफ्त पुस्तक वितरण की भी सिफारिश की।

मुख्य शब्दावली– बाल गंगाधर तिलक, शिक्षा, भारतीय समाज में योगदान

प्रस्तावना–

बाल गंगाधर तिलक का मुख्य कार्य समाज में फैली कुप्रथाएँ (बालविवाह, सतीप्रथा, जमीदारी प्रथा) के घोर विरोधी थे। उन्होंने समाज में फैली इन कुप्रथाओ को दूर करने के लिए समाज को शिक्षित होना अति आवश्यक है अतः इन्होने समाज की प्राथमिक शिक्षा पर अधिक महत्व दिया। बाल गंगाधर का मानना था कि यदि प्राथमिक शिक्षा छात्रो की ठीक हो तो छात्र अपने जीवन का निर्माण ठीक तरह से कर सकते है जैसे यदि मकान की नींव ठीक हो तो उस पर कितनी भी मंजिल बनाई जा सकती है उसी प्रकार यदि विद्यार्थी की प्रारम्भिक शिक्षा ठीक है तो उसे आगे की शिक्षा या समाज में परेशानियां नही आती है।

जीवन परिचय–

बाल गंगाधर का जन्म ब्रिटिश समय में महाराश्ट्र के एक छोटे से गाँव चिखली में हुआ था। बाल गंगाधर का मूल नाम केशव गंगाधर तिलक था। बालगंगा पर के पिता केशव जी एक संस्कृत अध्यापक थे। इनकी माताजी का देहान्त बचपन में ही हो गया था। इनकी पत्नी का तापी था।

शिक्षा–

बाल गंगाधर की आरम्भिक शिक्षा रत्नागिरी की एक पाठशाला में हुआ था उनके पिताजी दादाजी गंगाधर को शुरू से भारत के गुलाम होने की कहानी सुनाया करते थे। इनकी ये कहानी उनके दिमाग में अच्छी तरह से बैठ गयी। पुणे में पढ़ाई समय उनकी माता का देहान्त हो गया था। गंगाधर ने पुणे के डेक्कन कॉलेज में अपनी पढाई की। डेक्कन कॉलेज में उनकी मित्रता अगरकर से हुई। डेक्कन कॉलेज के मित्र बाल गंगाधर तिलक को मिस्टर ब्लंट कहकर पुकारते थे। बाल गंगाधर तिलक मे डेक्कन कॉलेज से ही एलएलबी की पढ़ाई पूरी की। उनका उद्देश्य भारतीय समाज को समुचित शिक्षा प्रदान करना। उन्होंने समाज को शिक्षा देने के लिए प्राइवेट स्कूल खोलने की निश्चय किया उनका प्राइवेट स्कूल खोलने का मुख्य उद्देश्य था कि हर समाज को आत्म निर्भर बनाना था।

1880 में बाल गंगाधर में आगरकर और चिपलूणकर के साथ मिलकर 2 जनवरी 1880 मे न्यू इंग्लि ा स्कूल को स्थापना की। गंगाधर के विचारों से प्रभावित होकर भारतीय समाज के सैकड़ो लोगो ने न्यू इंग्लिश में प्रवे ा लेना प्रारम्भ कर दिया। इनके खोले गये स्कूलो से समाज में बदलाव आने लगा।

बाल गंगाधर तिलक ने भारतीय समाज के लिए 24 अक्टूबर 1884 को डेक्कन एजुकेशन सोसायटी की स्थापना की जिसमें उनके मुख्य सहपाठी आगरकर थे। 2 जनवरी 1885 को फर्ग्यूसन कॉलेज की स्थापना की इस कॉलेज में बाल गंगाधर तिलक स्वयं गणित और संस्कृत का अध्ययन कराते थे। तिलक की सोच थी कि स्वदेशी समान को अपनाने के लिए पहले लोगों भी सोच को बदलना होगा शिक्षण की यह प्रेरणा बाल गंगाधर तिलक को बाल कृष्ण गोखले और महात्मा गांधी से मिली। गणतन्त्र भारत में अनिवार्य शिक्षा सभी वर्गों के लिए अपनायी जाने लगी परन्तु हमारे शिक्षा शास्त्रीयों ने यह नहीं सोचा कि जिसको आज हम भारतीय मे अपनाने के लिए जा रहे हैं वह अनिवार्य एवं निशुल्क शिक्षा 1880 को लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक ने पहले ही दे दी।

समाज में योगदान–

बाल गंगाधर तिलक ने समाज मे फैली कुप्रथाओं बालविवाह, सती प्रथा, जमींदारी प्रथा का घोर विरोध किया उनकी मान्यता थी कि यदि समाज में लोग शिक्षित होगें तो इन कुप्रथाओं से समाज को मुक्ति मिल सकती है। बाल गंगाधर तिलक ने समाज की कुप्रथाओं को दूर करने के लिए एवं देश की जनता को जागृत करने के लिए सबसे पहले उन्होंने भारतीय समाज को धर्म से जोड़ा और इसकी शुरूआत सबसे पहले उन्होंने महाराष्ट्र शिवाजी महोत्सव एवं गणपति महोत्सव मनाने का फैसला लिया।

हमें ज्ञात है कि बाल गंगाधर तिलक ने अपने जीवन में हमेशा समन्वयकारी का नीति को ही अपनाया था। बाल गंगाधर तिलक ने निःसन्देह अपने जीवन में भारतीय वैदिक व उपनिषद् कालीन शिक्षा प्रणाली को मान्यता प्रदान की तिलक ने अंग्रेजी शिक्षा में जो अच्छे विचार या गुण हैं उन्हें अपने जीवन में अपनाने की सलाह दी उनकी मान्यता थी कि जिस प्रकार रविन्द्र नाथ टैगोर ने विश्व भारतीय विश्वविद्यालय पूर्वी एवं पश्चिमी सभ्यता का एक संगम केन्द्र बनाया था। उसी प्रकार ही तिलक भी अपने आदर्शवाद व कर्मवाद को अपने जीवन में अपनाना चहाते थे।

तिलक और शिक्षा–

तिलक के रचनात्मक स्वभाव और बहुमुखी प्रतिभा ने उनका ध्यान विभिन्न सामाजिक समस्याओं और भारतीय शिक्षा की ओर आकर्षित किया। उन्होंने खुले तौर पर भारतीय लोगों को उचित शिक्षा प्रदान नहीं करने के लिए अंग्रेजी सरकार को दोषी ठहराया। उन्होंने महसूस किया कि मौजूदा शिक्षा प्रणाली में थोड़ा सा संशोधन फलदायी साबित नहीं होगा। उन्होंने समग्र परिवर्तन की याचना की और इसलिए उन्होंने कहा कि ''कृपया विरोध करें'' अन्यथा कोई ठोस परिणाम नहीं लाएगा।

इस प्रकार तिलक अंग्रेजी सरकार की शिक्षा नीति से असंतुष्ट थे। उन्होंने यह भी वकालत की कि शिक्षा से ही भारतीय अपने देश को गुलामी के बंधन से मुक्त कर सकते हैं। तिलक ने राष्ट्रीय शिक्षा पर जोर दिया है, गोखले की तरह उन्होंने भी अनिवार्य प्राथमिक शिक्षा की सिफारिश की थी। तिलक एक यथार्थवादी राजनीतिज्ञ थे और चाहते थे कि शिक्षा व्यक्तियों और समाज के सामंजस्यपूर्ण विकास के लिए एक माध्यम के रूप में काम करे। इस प्रकार तिलक शिक्षा से असंतुष्ट थे। तिलक का मत था कि देश में शिक्षा सर्व सुलभ होगी तो प्रत्येक समाज का प्रत्येक व्यक्ति शिक्षित हो सकेगा और भारतीय राजनीति या भारतीय समाज में अपना योगदान दे सकता है जिससे यह रहे कि भारतीय शिक्षा में सभी लोगों का समान योगदान है।

वर्तमान सरकार द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में छात्र–छात्राओं के लिए मुफ्त शिक्षा व मुफ्त पुस्तकों की घोषणा की जा लिए रही है यह घोषणा लोकमान्य तिलक चिपणलुकर व आगरकर यह इन तीनों ने मिलकर समाज को 1980 में इस योजना को लागू करने का पूरा प्रयास किया गया लेकिन अंग्रेजी सरकार व स्वार्थी भारतीय नेताओं ने इनकी इस योजना को उस समय लागू नही होने दिया था।

भारत की निरक्षरता को दूर करने के लिए लोकमान्य की तरह गोपाल कृष्ण गोखले ने भी कार्य किया लेकिन गोपाल कृष्ण गोखले उदारवादियों के सिरमोर नेता थे, उन्होंने अपने जीवन में नैतिक मूल्यों को अधिक महत्व दिया उन्होंने राजनीति व नैतिकता में अन्तर नहीं माना। यही कारण है कि उन्होंने सरकार का ध्यान प्राथमिक शिक्षा को निःशुल्क करने के लिए अपनी ओर ध्यान आकर्षित किया। लेकिन सरकार का मुख्य उद्देश्य माध्यमिक व उच्च माध्यमिक शिक्षा की ओर अधिक था लेकिन गोखले की मान्यता थी कि माध्यमिक व उच्च माध्यमिक शिक्षा से पहले सरकार को प्राथमिक ि ाक्षा की ओर ध्यान देना चाहिए।

निष्कर्ष –

बाल गंगाधर ने अपने जीवन में कठिन परिश्रम करते हए समाज में फैली हुयी बुराइयों के खिलाफ अनेक कदम उठाये लेकिन कुछ स्वार्थी राजनीतिज्ञ लोगों ने अपने स्वार्थ के लिए तिलक द्वारा उठाये गये कदमों का सहयोग ठीक से नही किया अगर सभी राजनीतिज्ञ लोग तिलक का सहयोग ठीक से करते तो भारतीय समाज की तस्वीर बदलने में देर नहीं लगती।

संदर्भ ग्रंथ सूची

- डॉ. बैद्यनाथ प्रसाद वर्मा, ***वि व के महान ि ाक्षा भाास्त्री*** बिहार हिन्दी ग्रंथ अकादमी (पटना)
- गायत्री पगड़ी, ***लोक मान्य तिलक***, क्रियटिव मीडिया, अहमदाबाद
- सचिन सिंघल, ***बाल गंगाधर तिलक***, प्रभात प्रकाशन, पूना
- डॉ. धर्मेन्द्र कुमार, ***उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक***, आर. लाल बुक डिपो मेरठ
- जे. पी. जैन, विनोद तिवारी, ***बाल गंगाधर तिलक***, उत्कर्ष प्रकाशन, मेरठ, यूपी
- प्रो. रमन बिहारी लाल, ***शिक्षा के दार्शनिक एवं समाज शास्त्र के सिद्धान्त***, रस्तोगी पब्लिकेशन, मेरठ
- मनोज तिवारी, ***बाल गंगाधर तिलक***, मनोज पब्लिके ान, नई दिल्ली
- बृजभूषण शर्मा, ***शैक्षिक समाज विज्ञान***, उत्तरप्रदेश हिन्दी ग्रंथ अकादमी, मेरठ
- एन आर सक्सैना, डा. शिखा चतुर्वेदी, ***उदीयमान भारतीय समाज मे शिक्षा***, आर. लाल बुक डिपो, मेरठ
- एन आर सक्सैना, के.पी. पाण्डेय , ***शिक्षा के दार्शनिक एवं समाज ाास्त्र***, आर. लाल बुक डिपा, मेरठ